Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2021, VOL- 9/66
10.21922/srjis.v9i66.6850

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

ब्रिजेश कुमार[1] & रमेन्द्र कुमार गुप्ता[2], Ph. D.

[1]अनुसंधान कर्त्ता, शिक्षा विभाग, एन.ए.एस. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]सह–आचार्य, शिक्षा विभाग, एन.ए.एस. (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Paper Received On: 21 JULY 2021
Peer Reviewed On: 31 JULY 2021
Published On: 1 SEPT 2021

Abstract

आज के प्रौद्योगिकी व वैज्ञानिक युग में शिक्षा के प्रसार के उपरान्त विद्यार्थियों के मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। वर्तमान युग में विद्यार्थियों में आध्यात्मिक मूल्यों का अभाव होने के कारण उनके मानसिक व भौतिक विकास पर प्रभाव पड़ रहा है। आध्यात्मिक मूल्य विद्यार्थी जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करते है। आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा विद्यार्थी स्वयं का विकास करते है एवं स्वयं को पहचानते हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय में शिक्षा के माध्यम से आध्यात्मिक मूल्यों के लिए प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में आध्यात्मिक मूल्य का विकास होता है तथा आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है। विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यों का बहुत अधिक महत्त्व है। अनुसंधान कर्त्ता ने सम्बंधित साहित्य का अध्ययन किया तो पाया कि विद्यार्थियों में दोनों प्रकार के सकारात्मक व नकारात्मक तथा उच्च व निम्न आध्यात्मिक मूल्य का स्तर पाया गया। अनुसंधान कर्त्ता ने अपने अध्ययन में शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। जिसमें अनुसंधान कर्त्ता ने न्यादर्श के रूप में उ0 प्र0 बोर्ड के द्वारा संचालित जनपद–मेरठ के 346 विद्यालयों में से लॉटरी विधि का प्रयोग करके 4 विद्यालयों का चयन किया, उसके बाद अनुसंधान कर्त्ता ने सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुए सभी विद्यालयों से कुल 80 विद्यार्थियों (40 छात्र व 40 छात्राएं) जिनमें दो शहरी विद्यालयों से 20 छात्र व 20 छात्राएं तथा दो ग्रामीण विद्यालयों से 20 छात्र व 20 छात्राएं का चयन किया गया। अनुसंधान कर्त्ता ने अनुसंधान में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत तुलनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है तथा प्रदत्तों के संकलन के लिए अनुसंधान कर्त्ता ने प्रमाणीकृत उपकरण ***फोजिया नजम, प्रो. अकबर हुसैन*** *और* ***डॉ0 एस0 एम0 खान*** *द्वारा निर्मित* ***"आध्यात्मिक मूल्य मापनी"*** *का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए अनुसंधान कर्त्ता ने मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान एवं SPSS 2.0 सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया है। जिसके परिणाम के रूप में यह प्राप्त हुआ कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला है, शहरी छात्र और छात्राओ के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही मिला, ग्रामीण छात्र और छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर देखने को मिला जिसमें ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक है। शहरी और ग्रामीण छात्रों के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर देखने को मिला, जिसमे शहरी छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक है। शहरी और ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर देखने को मिलता है जिसमे ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य शहरी छात्राओं की अपेक्षा अधिक है तथा 0.01 स्तर पर शहरी और ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला है।*

मुख्यबिन्दु :– *आध्यात्मिक मूल्य (परोपकारी मूल्य, मानवतावादी मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य, ईश्वरीय मूल्य, भावात्मक मूल्य)*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना :–मूल्य मानव के मूलधन होते हैं। बिना मूल्य के मानव जीवन का कोई अस्तित्व नहीं होता है। मूल्य आधारित शिक्षा ही विद्यार्थियों को दिये गये ज्ञान व उनके कार्यों की प्रभावशीलता को बढ़ाती है। मूल्यों के द्वारा ही विद्यार्थी के व्यवहारों को निर्धारित, अग्रसर, निर्देशित, तथा नियन्त्रित किया जाता है। मूल्यपरक शिक्षा ही विद्यार्थी जीवन को उत्कर्ष की ओर ले जाती है। मूल्य ही विद्यार्थी जीवन का विश्वास है, जिनके आधार पर वह वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है। मूल्य समाज में सभी स्तरों पर उभरते है। मूल्य ऐसा सद्गुण या आचरण संहिता है, जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है और अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। मूल्य विद्यार्थियों के विचारों का मार्गदर्शन करते हैं, व्यवहार को निर्देशित करते है और व्यक्तित्व को आकार देते है। मूल्य हमें शान्ति, सद्भाव और पूर्ति के अनुभव के लिए तैयार करते है। मूल्य हमें आत्मविश्वास और निडरता देते है। मूल्य का अर्थ है– उपयोगिता, वांछनीयता, महत्त्व। मूल्य आधारित शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों में मानवीयता तथा राष्ट्रहित के प्रति गहरी रूचि उत्पन्न करना है। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक पक्ष का विकास होता है। मनोवैज्ञानिक अर्थ में मूल्य वह है जो हमारी इच्छा को पूरा करता है।

अर्बन– ''मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करें''

मेकेन्जी– ''सुख को मूल्य की अनुभूति के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।''

पिंलक महोदय के अनुसार ''हम जिन मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्त्व देते है, जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते है, वे ही हमारे मूल्य होते है।''

कुछ विद्वानों द्वारा मूल्यों का वर्गीकरण सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, आर्थिक मूल्य और राजनैतिक मूल्य जैसे आयामों द्वारा किया गया है परन्तु भिन्न–भिन्न अनुशासनों में मूल्यों का वर्गीकरण भिन्न–भिन्न प्रकार से किया गया है। भारतीय दार्शनिकों द्वारा मूल्यों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है–

1. आध्यात्मिक मूल्य   2. भौतिक मूल्य

आध्यात्मिक मूल्यों से तात्पर्य ऐसे मूल्यों से है जो हमारे आध्यात्मिक चिन्तन और व्यवहार को दिशा प्रदान करते है। जैसे– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति मानव की तीनों क्रियाओं ज्ञान, अनुभव और इच्छा द्वारा होती है। आध्यात्मिक मूल्य सभी मानवीय मूल्यों के आधार है। भौतिक मूल्यों से तात्पर्य ऐसे मूल्यों से है जिनका सम्बन्ध हमारे ऐहिक जीवन से है जो हमारे सामाजिक व्यवहार को दिशा प्रदान करते है, जैसे– प्रेम, सहानुभूति, सहयोग और राष्ट्रप्रेम।

श्री अरविन्दो के अनुसार– ''प्रत्येक मनुष्य में आध्यात्मिकता निहित है। आध्यात्मिक मूल्यों के लिये शिक्षा के दो स्तर है। पहले स्तर पर हमारी शिक्षा को उच्चतर मूल्यों के शिक्षण का अवसर प्रदान किया जाना

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चाहिए। इस निम्न स्तर पर सभी को उच्चतर मूल्यों की शिक्षा मिलनी चाहिए। दूसरें स्तर पर उन लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए जो आध्यात्मिक मूल्यों के अनुसरण की योग्यता रखते है।''

सम्बन्धित साहित्य :–

सुनीता (2016)– ''युवाओं के मूल्यों का अध्ययन'' के अनुसार आधुनिकीकरण के कारण युवाओं के मूल्यों में होने वाले परिवर्तन को दर्शाता है। छात्र–छात्राओं में लोकतान्त्रिक, सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा के मूल्य उच्च स्तर के पाए गए जबकि कला व विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के धार्मिक व आर्थिक मूल्यों में अन्तर पाया गया। छात्र–छात्राओं के ज्ञानात्मक, सुखात्मक तथा शक्ति मूल्यों में भी अन्तर पाया गया जबकि कलात्मक व स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

डॉ0 देवराज (2017)– 'मानवता और आध्यात्मिक मूल्य' के अध्ययन में पाया गया कि भारतीय आध्यात्मिक दर्शनों के जिन मतों व प्रयत्नों का उल्लेख है वे आध्यात्मिक धर्म की प्रचलित मान्यताओं के विरूद्ध पड़ते हैं। भारतीय दार्शनिकों ने इस बात पर अधिक बल दिया है कि मनुष्य अपने अंहकार मूलक आत्म को भूल जाना सीखें, इस आत्म को भूलकर ही मनुष्य निस्वार्थ, पूर्ण तथा शांतचित बन जाता है। जीवन के प्रति वह दृष्टि या मनोभाव जो संत चरित्र को उत्पन्न करता है, सच्ची 'आध्यात्मिकता' या 'आध्यात्म' है।

ठाकुर, रचना सिंह (2018)– 'ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन' के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभिन्न संकाय के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक और सामाजिक मूल्यों में अन्तर पाया गया जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सैद्धांतिक, धार्मिक और आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता :–विद्यार्थी जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित रहता है। आध्यात्मिकता विद्यार्थी के अन्दर छिपे मूल्यों को जागृत करने का एक बहुत ही अच्छा तरीका है जिसकी आज प्रत्येक विद्यार्थी को आवश्यकता है। मूल्यों के आधार पर किया गया कर्म श्रेष्ठ होता है जिससे विद्यार्थी के मन को खुशी और सन्तुष्टि मिलती है। मूल्य आधारित जीवन शैली के दृष्टिगत विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास के लिए विशिष्ट व संगठित प्रयास किये जायें। शिक्षा की प्रकिया का संचालन विद्यालयों में किया जाता है। विद्यालयों में ही शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है। विद्यालय को समाज का लघु रूप माना जाता है। विद्यालयों का प्रयास रहता है कि शिक्षण कार्य के साथ–साथ विद्यार्थियों में आध्यात्मिक मूल्यों का विकास किया जाए। आज का मनुष्य पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति का पोषक है। भौतिकता की रोशनी में मानव स्वयं को विदेशी जैसा दिखाने में गौरान्वित महसूस करता है। आज के मनुष्य को वस्तुगत मूल्यों में विश्वास नहीं है और आध्यात्मिकता निरर्थक हो चुकी है। इस दशा से मुक्ति पाने के लिए मूल्य शिक्षा के अन्तर्गत आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान में प्रतिकूल परिस्थितियां भविष्य में विद्यार्थी जीवन को शर्मनाक बना सकती है।

अतः भविष्य में सुखद भविष्य हेतु आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा आवश्यक है। मूल्यों पर विद्यार्थी जीवन आधारित है। वैज्ञानिक युग में मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता है। मूल्यों की शिक्षा प्रक्रिया ज्ञान से आरम्भ होती है। मूल्य पुस्तकों द्वारा नही सिखाये जाते है। अध्यापकों, माता–पिता, मित्रों, पड़ोसियों एवं समाज के दूसरे लोगों के दैनिक जीवन द्वारा छात्र–छात्राओं में इनका निर्माण किया जाता है। मूल्यों की यथार्थता तो हमारे आचरण और संस्कारों में निहित होती है जिनसे हमें सन्तोष की प्राप्ति होती है। आज के वैज्ञानिक एवं परिवर्तनशील युग में विद्यार्थियों के मूल्यों के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। आज हमें यह जानने की आवश्यकता है कि विद्यार्थियों की आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति क्या रूचि है? उनका आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण क्या है? आज के विद्यार्थी को मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों के मूल्यों का उचिता विकास हो। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि **''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन''** किया जाना आवश्यक है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह शोध कार्य किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :– प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं के आधार पर अध्ययन किया जायेगा।

H.0.1- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

H.0.2- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

H.0.3- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

H.0.4- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

H.0.5- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

संक्रियात्मक परिभाषाएं :–

उच्चतर माध्यमिक स्तर :– यहाँ पर उच्चतर माध्यमिक स्तर से तात्पर्य यू0 पी0 बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा–12 के विद्यार्थियों से है।

आध्यात्मिक मूल्य :– आध्यात्मिक मूल्य से तात्पर्य उन सभी मानवीय मूल्यों से है जिनकी एक मनुष्य को आवश्यकता होती है, जो विचारों का मार्गदर्शन, व्यक्तित्व को आकार और व्यवहार को निर्देशित करते है। आध्यात्मिक मूल्य से सम्बंधित 5 पक्षों (परोपकारी मूल्य, मानवतावादी मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य, ईश्वरीय मूल्य, भावात्मक मूल्य) को संदर्भित किया जाता है, जो मानव आत्मा को आत्मसात् करते है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने यू0 पी0 बोर्ड द्वारा संचालित मेरठ जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की सूची बनायी तथा सभी विद्यालयों के नामों से पर्ची बनायी तत्पश्चात लॉटरी विधि से चार विद्यालयों का चयन किया जिनमें दो शहरी एवं दों ग्रामीण विद्यालयों में सें 20–20 छात्र–छात्राओं को लिया गया जिनकों मिलाकर कुल 80 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

अध्ययन विधि :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग वर्तमान समय में सामान्य या विशिष्ट परिस्थिति का पता लगाने हेतु किया जाता है।

प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में आध्यात्मिक मूल्य के मापन हेतु **फोजिया नजम, प्रो. अकबर हुसैन** और **डॉ0 एस0 एम0 खान** द्वारा निर्मित **''आध्यात्मिक मूल्य मापनी''** का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में आध्यात्मिक मूल्य से सम्बन्धित 5 पक्षों (परोपकारी मूल्य, मानवतावादी मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य, ईश्वरीय मूल्य, भावात्मक मूल्य) पर 27 प्रश्न दिए गए है।

अध्ययन का परिसीमांकन :– प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में समय सीमा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन निम्न क्षेत्रों तक सीमित है।

1. जनपद के यू0 पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय।
2. मेरठ जनपद के 4 विद्यालय जिसमें 2 शहरी एवं 2 ग्रामीण विद्यालयों में से 20–20 छात्र–छात्राओं को लिया गया जिनको मिलाकर कुल 80 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रदत्तों की विश्लेषण प्रक्रिया :– प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान कर्त्ता ने प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात का प्रयोग किया है।

प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या :–

तालिका–1

विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों का स्तर	**विद्यार्थियों की संख्या**
अत्यन्त उच्च आध्यात्मिकता	31
उच्च आध्यात्मिकता	21
औसत से ऊपर आध्यात्मिकता	15
औसत / मध्यम आध्यात्मिकता	3
औसत से नीचें आध्यात्मिकता	3
निम्न आध्यात्मिकता	3
अत्यन्त निम्न आध्यात्मिकता	4

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के **''आध्यात्मिक मूल्य''** की तुलना करने के लिए दोनों समूहों के मध्यमान, मानक विचलन, एवं टी–मान का विवरण अधोलिखित तालिका संख्या–2 में दिया गया है।

तालिका–2

समूह	**N**	**मध्यमान [Mean]**	**मानक विचलन [S.D]**	**टी. मान [T-Value]**	**स्वतत्रांश [df]**	**सार्थकता मान**	**परिणाम**
शहरी विद्यार्थी	40	108.4000	14.18161	.914	78	1.98 *	सार्थक नही
ग्रामीण विद्यार्थी	40	104.6500	21.74626			2.62 **	

*0.05 स्तर पर

**0.05 स्तर पर

उपरोक्त तालिका संख्या–2 से स्पष्ट होता है कि यू0 पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयी विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 108.4000 एवं 14.18161 तथा ग्रामीण विद्यालयी विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 104.6500 एवं 21.74626 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य टी–मान [t-Value] .914 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर टी. टेबिल के मान 1.98 से कम है तथा

सार्थक अन्तर व्यक्त नही करता है, इसी प्रकार 0.01 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.62 से भी कम है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त नही करता है, अतः परिकल्पना संख्या–1 की ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' को स्वीकार किया जाता है।

शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के **''आध्यात्मिक मूल्य''** की तुलना करने के लिए दोनों समूहों के मध्यमान, मानक विचलन, एवं टी–मान का विवरण अधोलिखित तालिका संख्या–3 में दिया गया है।

तालिका–3

स्मूह	N	मध्यमान [Mean]	मानक विचलन [S.D]	टी. मान [T-Value]	स्वतत्रांश [df]	सार्थकता मान	परिणाम
शहरी छात्र	20	109.7500	10.13527	.597	38	2.02 *	सार्थक नही
शहरी छात्राऐं	20	107.0500	17.50030			2.70 **	

*0.05 स्तर पर

**0.05 स्तर पर

उपरोक्त तालिका संख्या–3 से स्पष्ट होता है कि यू0 पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयी छात्र के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 109.7500 एवं 10.13527 तथा शहरी विद्यालयी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 107.0500 एवं 17.50030 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य टी–मान [t-Value] .597 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.02 से कम है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त नही करता है, इसी प्रकार 0.01 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.70 से भी कम है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त नही करता है, अतः परिकल्पना संख्या–2 की ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' को स्वीकार किया जाता है।

ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के **''आध्यात्मिक मूल्य''** की तुलना करने के लिए दोनों समूहों के मध्यमान, मानक विचलन, एवं टी–मान का विवरण अधोलिखित तालिका संख्या–4 में दिया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका–4

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मान	स्वतत्रांश	सार्थकता मान	परिणाम
		[Mean]	[S.D]	[T-Value]	[df]		
ग्रामीण छात्र	20	92.7000	24.71543	4.129	38	2.02 *	सार्थक
ग्रामीण छात्राऐं	20	116.6000	7.69415			2.70 **	

*0.05 स्तर पर

**0.05 स्तर पर

उपरोक्त तालिका संख्या–4 से स्पष्ट होता है कि यू0 पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयी छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 92.7000 एवं 24.71543 तथा ग्रामीण विद्यालयी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 116.6000 एवं 7.69415 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य टी–मान [t-Value] 4.129 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.02 से अधिक है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त करता है, इसी प्रकार 0.01 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.70 से भी अधिक है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त करता है, अतः परिकल्पना संख्या–3 कि ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के **''आध्यात्मिक मूल्य''** की तुलना करने के लिए दोनों समूहों के मध्यमान, मानक विचलन, एवं टी–मान का विवरण अधोलिखित तालिका संख्या–5 में दिया गया है।

तालिका–5

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मान	स्वतत्रांश	सार्थकता मान	परिणाम
		[Mean]	[S.D]	[T-Value]	[df]		
शहरी छात्र	20	109.7500	10.13527	2.854	38	2.02 *	सार्थक
ग्रामीण छात्र	20	92.7000	24.71543			2.70 **	

*0.05 स्तर पर

**0.05 स्तर पर

उपरोक्त तालिका संख्या–5 से स्पष्ट होता है कि यू0 पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयी छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः

109.7500 एवं 10.13527 तथा ग्रामीण विद्यालयी छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 92.7000 एवं 24.71543 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य टी–मान [t-Value] 2.854 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.02 से अधिक है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त करता है, इसी प्रकार 0.01 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.70 से भी अधिक है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त करता है, अतः परिकल्पना संख्या–4 कि ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के **''आध्यात्मिक मूल्य''** की तुलना करने के लिए दोनों समूहों के मध्यमान, मानक विचलन, एवं टी–मान का विवरण अधोलिखित तालिका संख्या–6 में दिया गया है।

तालिका–6

समूह	N	मध्यमान [Mean]	मानक विचलन [S.D]	टी–मान [T-Value]	स्वतत्रांश [df]	सार्थकता मान	परिणाम
शहरी छात्राओं	20	107.0500	17.50030	2.234	38	2.02 *	सार्थक
ग्रामीण छात्राओं	20	116.6000	7.69415			2.70 **	सार्थक नही

*0.05 स्तर पर

**0.05 स्तर पर

उपरोक्त तालिका संख्या–6 से स्पष्ट होता है कि यू0 पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 107.0500 एवं 17.50030 तथा ग्रामीण विद्यालयी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य का मध्यमान [Mean] एवं मानक विचलन [S.D] क्रमशः 116.6000 एवं 7.69415 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य टी–मान [t-Value] 2.234 प्राप्त हुआ जो 0.05 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.02 से अधिक है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त करता है, इसी प्रकार 0.01 स्तर पर टी. टेबिल के मान 2.70 से कम है तथा सार्थक अन्तर व्यक्त नही करता है, अतः परिकल्पना संख्या–5 कि ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है'' को 0.05 स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है तथा 0.01 स्तर पर स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध में सभी परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के उपरान्त निष्कर्ष में देखा गया कि शहरी छात्रों और ग्रामीण छात्राओं में आध्यात्मिक मूल्यों की प्रवृत्ति अधिक पायी गयी जो सकारात्मक व उच्च स्तर की है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला।
- शहरी छात्र और शहरी छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला।
- ग्रामीण छात्र और ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है जिसमें ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक पाए गए है।
- शहरी छात्र और ग्रामीण छात्रों के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर देखने को मिला है जिसमें शहरी छात्रों के आध्यात्मिक मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक पाए गए है।
- शहरी छात्राओं और ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया जिसमें ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्य शहरी छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाए गए तथा 0.01 स्तर पर शहरी छात्राओं और ग्रामीण छात्राओं के आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला।

शैक्षिक सुझाव :– विद्यार्थियों को मूल्यों से स्वयं को मूल्योन्मुख बनाना चाहिए। विद्यार्थियों के सर्वागींण विकास एवं स्वयं को पहचानने हेतु शिक्षा के द्वारा मूल्यों को विकसित करना एवं मूल्यों की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। जिससे विद्यार्थी मूल्यों को आत्मसात् कर सके। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों तथा परिवार के द्वारा विद्यार्थियों में आध्यात्मिक मूल्यों का विकास इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं के साथ–साथ एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर अपना उज्जवल भविष्य बना सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

ठाकुर, रचना सिंह, (2018), ''ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन,'' रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, (म.प्र.), www.ijcrt.org 2018IJCRT Volume6, issue1, PP:739-744

सुनीता, (2016), ''युवाओं के मूल्यों का अध्ययन'',International Journal of Applied Research 2016; 2(10), PP:174-177

लाल, रमन बिहारी व पलोड़, सुनीता, (2016), 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं.–350,354

कैला, शोभा अग्रवाल, (2014), 'मूल्य शिक्षा', आर.लाल बुक डिपों, मेरठ, पृ.सं.–03

नजम, फोजिया, हुसैन, अकबर व खान, एस.एम. (2014), ''आध्यात्मिक मूल्य मापनी'',नेशनल साइक्लोजिकल कॉरपोरेशन आगरा, (उ.प्र.), पृ.सं.–01–11

त्यागी, गुरसरनदास व नन्द, विजय कुमार, (2011–12), 'उदीयमान भारत में शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.सं. –361

कन्नौजिया, कृष्ण कुमार व सिंह, जे.पी. (2009), ''गोण्डा जनपद के स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'',डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, (उ.प्र.), पृ.सं.–68

वर्मा, जी.एस. व कुमारी, सविता,(2010), आमुख, ''मूल्य शिक्षण'',इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, (उ.प्र.)